रिकॉर्ड :– तू प्यार का सागर है.... पिताश्री ॐ 19/5/64
ओमशांति। गायन तो शास्त्रों में भी है इस समय जबकि बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है अर्थात् आत्मा की आँख खुली है। त्रिनेत्री कहा जाता है न! इनको तीजरी की कथा भी कहते हैं। वास्तव में है एक ही नाम। राजयोग, राजाई प्राप्त करने के लिए योग। राजाई प्राप्त कराने वाले से और राजाई से योग इनका हो। अक्षर हैं– मन्मनाभव, मद्याजीभव। मुझे याद करो, अपने चतुर्भुज को याद करो। बाप ने कोई संस्कृत में तो गीता नहीं सुनाई है। बच्चे जानते हैं, बाप क्या समझाते हैं और शास्त्रों में क्या है। बाप प्यार का सागर तो ज़रूर है, तब तो प्यारे ते प्यारे वस्तु को याद किया जाता है न! बाप भी जानते हैं, बच्चों को जाकर सदा सुखी बनाना है। बच्चे थोड़े ही जानते हैं। यह (दादा) तो बड़ा सुखी था। इनको कोई दुःख न था; परन्तु यह नहीं जानते थे कि बाप क्या सुख आकर देते। अभी तुम अनुभवी बनती जाती हो। बाप आय कर सदा सुखी, सदा शांत बनाते हैं। सुख होता ही है सम्पत्ति से। बाप आकर वर्सा देते हैं। कोई धनवान भी होते हैं, बच्चे को वर्सा देते हैं, सुखी बनते(बनाते) हैं; परन्तु शांति तो नहीं दे सकते। शांति तो सब चाहते हैं। सन्यासी भी कहते हैं– मन की शांति चाहिए। आत्मा को मन की शांति चाहिए; क्योंकि मन–बुद्धि है आत्मा के अन्दर। तो कहते हैं, मन को शांति कैसे हो? बाबा ने समझाया है– पूछो, आत्मा को अशांत किसने किया? वह लोग तो कह देते, आत्मा दुःख–सुख से न्यारी, अभोक्ता, असोचता है; यह नहीं जानते, मन–बुद्धि आत्मा के ऑरगन्स हैं। बाप समझाते हैं, अशांत माया करती है। आत्मा का स्वधर्म है ही शांत, बाकी यह ऑरगन्स हैं; परन्तु शांत में कहाँ तक बैठे रहेंगे। सन्यासियों का तो है ही हठयोग। अंदर खड्डे में चले जाते हैं। यहाँ तो सहज रीति बाप बैठ नॉलेज देते हैं। कर्मयोग है न! यूँ तो शांत रात को भी मिलती है अच्छा। हम आत्मा इन ऑरगन्स से काम लेते व न लेते, यह तो हमारे हाथ है। मैं बाजा नहीं बजाता हूँ। अपन को डिटैच समझो। इसमें आँखें मूंदने की भी दरकार नहीं। आत्मा इन आँखों से देखती रहती है। आत्मा को आँखें मिली हैं देखने लिए। बाकी जवान से काम नहीं लेता हूँ, ऐसे ही बैठ जाता हूँ; परन्तु सिर्फ बैठ जाने से कोई फायदा नहीं। फायदा है ही बाप को याद करने से। जब तक सर्वशक्तिवान से योग नहीं तो कोई फायदा नहीं हो सकता। योग को ही अग्नि कहा जाता। इनको युद्ध का मैदान भी कहा जाता। माया पर जीत पाने का मैदान है। योग से तुम्हारी आयु भी बढ़ती है, विकर्म भी विनाश होते हैं। बड़ी खुशी होती है। बाबा को याद करते–2 बाबा के पास चले जाएँगे। है तो सब ड्रामा; परन्तु बाप हर एक बात समझाते हैं। बाप को याद करते रहो, साथ–2 सर्विस भी करनी है; क्योंकि तुम हठयोगी तो नहीं हो। ऑरगन्स मिले ही हैं कर्म करने लिए। सन्यासियों का है हठयोग कर्म सन्यास। कर्मकांड से वह अलग हो जाते हैं। इनको वहाँ ही तत्व योगी, ब्रह्मयोगी होकर रहना है। भिक्षा आकर लेनी है। आगे भिक्षा लेने जाते थे, स्त्री का मुँह नहीं देखते थे। आँखें बन्द कर ले जाएँगे, फिर आँखें खोलेंगे। शुरू–2 में ऐसे थे। तब सतोप्रधान हठयोग था। अभी तो वह भी तमोप्रधान बन गए हैं। आगे इन्हों को बहुत सुख था। आत्माएँ पहले सतोप्रधान रहती हैं, फिर सतो–रजो–तमो में आती हैं। अभी शुरू से लेकर सब तमोप्रधान हैं। कोई–2 अच्छी आत्मा होगी तो नामबाला रहता है; परंतु पिछाड़ी वालों में ताकत कम रहती है, पहले वालों में ताकत जास्ती होती है। तो बेहद का बाप है प्यार का सागर। कितना खैंचते हैं! देखो, यह ल०ना० कितने खैंचते हैं। इनको किसने बनाया इतना मीठा, कोई नहीं जानते। जो खुद पूज्य थे, वह ही पुजारी बने हैं। तुम्हारी मम्मा–बाबा, वह भी नहीं जानते थे। अभी जानने से जाग उठे हैं– (ओ हो!) हम सो देवता थे। भगवान बैठ जगाते हैं, माया पर जीत पाने की युक्ति बतलाते हैं। बाकी और कोई हथियार आदि कुछ नहीं हैं। मनुष्य आदि कुछ नहीं जानते– माया किसको कहा जाता। बिल्कुल ही बेसमझ हैं। ऐसे पत्थरबुद्धि बने, तब तो आकर फिर पारसनाथ बनाऊँ। ल०ना० मोस्ट बिलवेड हैं। इस समय हैं तमोप्रधान भक्तिमार्ग। परमात्मा को (न) जानने कारण ठिक्कर–भित्तर को याद करते रहते हैं। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को भी नहीं जानते। वह हैं सूक्ष्मवतन–

वासी। ल०ना० आदि को कहा जाता है दैवी गुण वाले मनुष्य। कृष्ण दैवी गुण वाला मनुष्य था। सतयुग आदि में कृष्ण को बड़ा प्यार करते हैं, झूलते(झुलाते) हैं। अगर कृष्ण पीछे द्वापर में आया तो राम को झूलना(झुलाना) चाहिए; परन्तु राम को कब ऐसे झूलते(झुलाते) नहीं हैं। उनका ऐसे छोटा रूप अंगूठा चूसते हुए सागर में नहीं दिखाते हैं। ऐसे कोई सागर में आते नहीं हैं। बच्चे तो गर्भ में रहते हैं। छोटे बच्चों का हमेशा अंगूठा मुख में रहता है, आदत होती है। वहाँ तो गर्भमहल में रहते हैं। कलहयुग में गर्भजेल कहा जाता है। आत्मा एक शरीर छोड़ यह भागी दूसरे शरीर में, देरी नहीं लगती। सबसे तीखी दौड़ी पहनने वाली आत्मा है, सेकेण्ड भी नहीं लगता। इनसे तीखा रूहाणी रॉकेट कोई होता नहीं। बाकी वह तो सब जिस्मानी चीज़ें हैं। तू प्यार का सागर है– यह एक की महिमा गाई जाती है। ज़रूर कुछ किया है, तब तो महिमा गाते हैं न! अब तुम बच्चे जानते हो, शिवबाबा बहुत प्यार का सागर है। कमाल है बाबा की! प्यार की शिक्षा दे ऐसा ल०ना० समान बनाते हैं। कितना प्यार का सागर है! उनका दीदार करने कितने मनुष्य जाते हैं श्रीनाथ द्वारे में। दीदार के लिए सोटी लगती रहती है, कितनी भीड़ हो जाती। बाबा कहते हैं, तुम बच्चों को भी इतना प्यारा बनाता हूँ। तुम सो देवी–देवता थे। 'हम सो, सो हम' कहते हैं न! वास्तव में है 'सो हम, हम सो'। सो हम बाबा के बच्चे थे, सो हम देवी–देवता थे, फिर सो हम क्षत्रिय बने। बाकी आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा– यह बात नहीं है। सो हम आत्मा पूज्य देवी–देवता थे, फिर 84 जन्म लिए हैं। सो हम देवता थे, फिर दो कला कम हो गई क्षत्रिय बने, फिर वैश्य बने, और दो कला कम हुई; इसको कहा जाता स्वदर्शनचक्र। एक सेकेण्ड लगता है इस चक्र फिराने में। अभी फिर सो हम ईश्वरीय संतान बने हैं– यह नशा चढ़ना चाहिए; इसलिए गाया जाता है– अति इन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपीव(ल्लभ) के गोपियों से पूछो। अभी हम ईश्वर के संतान बने हैं। कितना नशा चढ़ना चाहिए– हम सो फिर से आय बाबा के बने हैं, हम सो फिर देवता बनेंगे, हम आत्मा सो बनेगी, अब बन रहे हैं। हम सो, सो हम का अर्थ सारी दुनिया में कोई नहीं जानते, जबकि नम्बर वन–टू भी कल कुछ नहीं जानते थे। कल नर्कवासी थे, आज स्वर्गवासी बन रहे हैं। कल रात में थे, आज दिन में हैं। गाया भी जाता है– ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया, अज्ञान अंधेर विनाश। हम बिल्कुल तमोप्रधान थे, अब हमको बाप क्या बनाते हैं! कितना शौक से पालना करते हैं। गाली भी बहुत खानी पड़ती; परन्तु समझते हैं, यह भी ड्रामा है– नथिंग न्यू। युद्ध के मैदान में मेहनत तो ज़रूर करनी है। ऐसे नहीं, बिगर मेहनत कोई राजाई मिल जावेगी। स्टूडेन्ट्स ऐसे थोड़े कहेंगे– मास्टर जी, आशीर्वाद करो। अच्छा नम्बर पाने लिए तो पुरुषार्थ करना है न! यह गॉडली कॉलेज है। भगवानुवाच, मैं तुम बच्चों को राजाओं का राजा बनाता हूँ। इनका अर्थ भी कोई समझ न सकते। बेहद का बाप बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। कैपिटल यही यमुना का कंठा। देहली कैपिटल बहुतों के हाथ आई है। अब तो ठिक्कर की देहली है, फिर बनेगी सोने की। बाकी ऐसे नहीं, सोनी द्वारिका नीचे गई, फिर निकल आई। लंका कोई और नहीं, यह सारी दुनिया इस समय लंका है। रावण का राज्य चल रहा। सब सजनियाँ शोक वाटिका में बैठी हैं। वहाँ होती है अशोक वाटिका। बाप आकर रावण की शोक वाटिका से निकाल अशोक वाटिका में ले जाते हैं। यहाँ तो कदम–2 पर शोक, दुःख है। बाप आकर बहुत मीठा बनाते हैं। कहते हैं– मीठे–2 बच्चे, कब किसको दुःख न देना। सुख–शांति का दाता एक ही बाप है, वह आकर सुख–शांति का वर्सा देते हैं तो श्रीमत पर चलना पड़े। धंधे–धोरी से जितना समय मिले बाप को याद करो। योग अर्थात् पवित्रता का बल चाहिए, जिससे ही निरोगी काया बनेगी। भारत के प्राचीन योग की बहुत महिमा है। जब समय होगा तब खुद बाप ही आय वह नॉलेज देते, मनुष्य दे नहीं सकते। ऐसे बहुत सन्यासी बा(हर) में जाते हैं, कहते हैं– हम भारत का योग सिखाने आए हैं; परन्तु वह कोई राजयोग नहीं। गपोड़ा कि(तना)

मारते हैं! यह भी ड्रामा में नूँध है। भारत का प्राचीन राजयोग है। बाप कहते हैं– मैं आता ही हूँ कल्प के संगम युगे–2। इन्होंने संगम अक्षर निकाल ''युगे–2'' कह दिया। बाप समझाते हैं, सतयुग–त्रेता का संगमयुग होता है तो दो कला कम हो जाती है। फिर त्रेता से द्वापर होता तो और दो कला कम हो जाती। कलहयुग में तो बिल्कुल ही कलाएँ खत्म हो जातीं। तुम ही इन वर्णों में आती हो– देवता वर्ण, क्षत्रिय वर्ण। तुम बच्चे यथार्थ रीति समझते हो। यह सारा खेल है ही भारत पर। हार और जीत का खेल है। माया हराती है, बाप आकर माया पर जीत पहनाते हैं। यह कोई नहीं समझते कि माया ने अशांत किया है। अब बाबा कहते हैं– तुमने शांति का हार गँवाया है, अब फिर वही हार शांति का तुमको पहनाता हूँ, जिससे तुम एवर शांत बन जाती हो। फिर यह स्वदर्शनचक्र भी अंदर फिरना चाहिए। बाहर में शंख बजावेंगे तो भविष्य में राजा–रानी बन जावेंगे, और कुछ करना नहीं है। अति सहज है। बाप की पहचान मिली– बाबा हमारा स्वर्ग का रचता है। बरोबर हम स्वर्ग के मालिक थे, अब फिर से आया है बाबा मालिक बनाने। बस, बाबा अभी तो हमारे हैं, दूसरा न कोई। गीता में कृष्ण का नाम डालने से कह देते– मेरा तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई। समझते हैं, कृष्ण ही भगवान है, सब एक ही एक है। भगवान को न जानने कारण नास्तिक बन गए हैं। अब तुम बाप को जानने से आस्तिक बन पड़े हो। वह है विनाश काले विपरीत बुद्धि। विपरीत माने परमात्मा से प्रीत न है। और ही गाली देते हैं, बाप को कुत्ते–बिल्ले, पत्थर–भित्तर सबमें ठोक देते हैं। गरुड़ (पुरा)ण में बहुत रोचक बातें डाल दी हैं। तो बाप है प्यार का सागर, शांति का सागर, सुख का सागर। उनकी बहुत महिमा है। हर एक का पार्ट अलग–2 है। ऐसे नहीं, ब्र०वि०शं० सब एक ही भगवान है। नारायण भी भगवान, राम भी भगवान। अरे, ल०ना०, राम आदि 84 जन्म भोगते हैं, परमात्मा थोड़े ही 84 जन्म भोगते हैं। एक तरफ नाम–रूप से न्यारा भी कहते और भित्तर–ठिक्कर में परमात्मा कह देते। अभी तुम बाप को जानकर बाप से पूरा वर्सा लेने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। यह मकान आदि शिवबाबा बनवा रहे हैं बच्चों लिए; क्योंकि यहाँ आय बच्चों को पढ़ना है। मुसाफिरी पूरी कर घर के नजदीक जब आय पहुँचते हैं तो समझते हैं, अभी हम घर आय पहुँचे हैं। तो(जो) भी नजदीक आते जाएँगे तो खुशी का पारा चढ़ता जाएगा– अभी घर में सेफ्टी से पहुँच जाएँगे। तुम बच्चों को बहुत खुशी होगी, साक्षात्कार से बाबा बहलाएगा; क्योंकि हंगामा हो जाता है, तो इसी समय बाप के साथ रहने चाहते हैं। फिर साक्षात्कार होना बहुत सहज हो जाएगा। योग में बैठे–2 तुम बहुत साक्षात्कार करती रहेंगी। खुशी में तुम डांस करती हो। बाकी सब शरीर छोड़ चले जावेंगे। खूनी नाहक खेल है, छूरी लगाई, यह मरा। यवनों–कौरवों की लड़ाई है। यादव तो दूर हैं, तुम्हारे साथ कोई की युद्ध न है। तुम सा(क्षी) हो देखेंगे। फिर हिम्मत भी चाहिए। कमजोर तो ठहर न सके। जितना दुनिया में जास्ती दुःख होगा उतना बाबा तुमको बहलाने लिए बहुत सुख देगा। बैठे–2 बहुत साक्षात्कार करते रहेंगे।

इतने बच्चे हैं, शिवबाबा का भण्डारा तो ज़रूर भरपूर होगा। बच्चों से ही सब होता है। बच्चे कोई गरीब हैं, कोई साहुकार हैं। कोई पास ... बच्चे होंगे, उनमें भी कोई गरीब, कोई साहुकार होंगे। बच्चे तो ठहरे न! यह भी बड़ा बाप है। बेहद का घर है। यह मात–पिता हैं, फिर तुम बच्चों को सम्भालने लिए जगतअम्बा को निमित्त रखा हुआ है। है कुमारी, मम्मा में ज्ञान–योग की ताकत भरी हुई है। बाबा भी योग में रहते हैं, मुरली चलाते हैं। ऐसे तो नहीं समझते हो, शिवबाबा ही मुरली चलाते हैं। इनकी सोल भुट्टू है क्या! अच्छा, भल समझो, भुट्टू है, शिवबाबा ही मुरली चलाते हैं। उनको याद करना तो अच्छा ही है। सदैव समझो, इनमें शिवबाबा आकर हमको पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं, मुझे याद करने से तुम सदा सलामत रहेंगे। अच्छा, सिकीलधे, मीठे–2 बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग।